Year-4 Volume: II, April-June, 2022 Issue-14 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

# सामाजिक दृष्टि में 'किन्नर': एक विश्लेषण

**प्रिया सिंह**
शोधछात्रा, राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
ईमेल : priyasingh91lko@gmail.com

**डॉ. शार्दूल विक्रम सिंह**
एसोसिएट प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरु मेमोरियल पी.जी. कॉलेज, बाराबंकी, उ.प्र.

**शोध सार**

*भारतीय समाज में लिंग के आधार पर भेदभाव की जड़ें हमेशा से ही मजबूत रही हैं। लैंगिक भेदभाव से पीड़ित महिलाओं के अतिरिक्त समाज का एक वर्ग और है, जो समाज में उपस्थित होते हुए भी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्षरत है। 'हिजड़ा समुदाय', जिसे साहित्य में 'किन्नर' शब्द से सम्बोधित किया गया तथा सर्वोच्च न्यायालय ने 'थर्ड जेण्डर' शब्द प्रदान किया है।*

## प्रस्तावना

अगर हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श की शुरुआत कथा-साहित्य से मानी जाए तो 'यमदीप' उपन्यास सन 2002 में नीरजा माधव के द्वारा लिखा गया। तब से साहित्यकारों का ध्यान किन्नर लेखन की तरफ गया। कह सकते हैं कि किन्नर विमर्श की शुरुआत सन् 2000 के बाद ही हुई है। 'यमदीप' उपन्यास के बाद कथाकार महेंद्र भीष्म ने 'किन्नर कथा' सन् 2010 उपन्यास लिखा। हिन्दी के प्रमुख किन्नर आधारित उपन्यास यमदीप, किन्नर कथा, मैं पायल, गुलाममंडी, जिन्दगी 50-50, प्रदीप सौरभ का तीसरी ताली उपन्यास बहुत ही चर्चित है। साहित्य की इन विभिन्न विधाओं में किन्नर समस्याओं की पड़ताल की गयी है।

उपन्यास और कहानी में पात्रों के माध्यम से किन्नर से जुड़ी संवेदनाओं को प्रकट किया गया तथा उनकी पारिवारिक उपेक्षा और रिश्तां की तड़प व संवेदनाओं की तलाश और आर्थिक संकट, सामाजिक तिरस्कार, शैक्षणिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए किस तरह संघर्ष करते हैं। लिंगोपासक समाज ने किन्नरों को घोर अभिशप्त माना है।

## विषय विवेचन एवं विश्लेषण

पुराणों और महाभारत की कथाओं एवं आख्यानों में तो उनकी चर्चाएँ प्राप्त होती हैं। जैसा उनके नाम 'किं $ नर' से स्पष्ट है, उनकी योनि और आकृति पूर्णतः मनुष्य की नहीं मानी जाती। किन्नरों की उत्पति के बारे में दो प्रवाद हैं- एक

Year-4 Volume: II, April-June, 2022 Issue-14 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

तो यह कि वे ब्रह्मा की छाया अथवा उनके पैर के अँगूठे से उत्पन्न हुए। दूसरा यह कि अरिष्टा और कश्पय उनके आदिजनक थे। सप्तर्षियों से उनके धर्म जानने की कथाएँ प्राप्त होती हैं। उनके सैकड़ों गण थे और चित्ररथ उनका प्रधान अधिपति था।[1]

21वीं सदी के हिन्दी साहित्य में अगर किन्नर जीवन पर दृष्टि डालें तो देखने को मिलेगा कि उनकी दैहिक विसंगति का प्रभाव व मानसिक प्रभाव, किन्नरों का शोषण, मानवाधिकारों के लिए संघर्ष, अस्मिता, अस्तित्व का प्रश्न इन सभी पहलुओं से गुजरना पड़ता है। वे किस तरह हाशिए की परिधि में संघर्ष कर रहे हैं। 2015 में 'मैं लक्ष्मी मैं हिजड़ा' शीर्षक से लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी की आत्मकथा और प्रदीन सौरभ के 'तीसरी ताली' ने इस समाज की वेदनाओं, समस्याओं को सामाजिक जीवन तथा क्षमताओं को बहुत स्पष्टता से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।[2]

भारतीय मिथकीय साहित्य किन्नर के रूप में स्त्री-पुरुष से इतर तीसरे लिंग की परिकल्पना करता आया है। लेकिन यह भी सत्य है कि किन्नर का संस्कृत व्याकरण में एक अर्थ दुष्ट/विकृत मनुष्य भी बताया गया है। किन्नर से अभिप्राय उन लोगों से है जिनके जननांग पूरी तरह विकसित न हो पाए हों अथवा पुरुष होकर भी स्त्रैण स्वभाव के लोग, जिन्हें पुरुषों की जगह स्त्रियों के बीच रहने में सहजता महसूस होती है। किन्नरों को चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है- बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा।

किन्नर समुदाय जिनके प्रति समाज की सोच सदा परम्परागत और रूढ़िगत रही है, अपनी यौनिक भिन्नता के कारण समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित होने में असमर्थ रहे। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करने वाले इस समाज में मानो जैसे इस वर्ग की कोई आवश्यकता ही नहीं है। तृतीयलिंगी होने के कारण जिन्हें उनका परिवार ही त्याग देता है, उन्हें किन्नर समाज अपने संरक्षण में ले लेता है। इस समाज के कुछ अपने ही नियम व कानून हैं जिन्हें मानना अनिवार्य है। सम्पूर्ण किन्नर समुदाय को सामाजिक संरचना की दृष्टि से सात समाज या घरानों में बाँटा गया है।

साहित्यिक दृष्टिकोण से आज अनेक विमर्शों की चर्चा की जा रही है और समाज के अनेक उपेक्षित वर्गों पर साहित्य में चिन्तन हो रहा है किन्तु लिंग निरपेक्ष, समाज बहिष्कृत किन्नर समुदाय के विषय में कोई बड़ी चर्चा नहीं दिख रही है।

मानव जीवन में रिश्ते-नाते बहुत महत्व रखते हैं। किन्नर हो या साधारण बच्चा सभी रिश्तों के लिए तड़पते हैं। ऐसी स्थिति में यदि उस बच्चे को घर से बेघर कर दिया जाए, दर-दर भटकने के लिए छोड़ दिया जाए तो वह आतंकित होगा ही। 'जेनेटिक डिफेक्ट' के कारण यदि कोई बच्चा किन्नर के रूप में पैदा होता है तो इसमें उसका क्या दोष? उसे भी तो जीने का अधिकार है।

लिंग के आधार पर भेदभाव की जड़ें हमेशा से ही मजबूत रही हैं। लैंगिक भेदभाव से पीड़ित महिलाओं के अतिरिक्त समाज का एक वर्ग और है, जो समाज में उपस्थित होते हुए भी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्षरत है, वह है 'हिजड़ा समुदाय'। किन्नर हिजड़े नहीं होते। हिजड़ों के साथ एक प्राकृतिक क्रूर मजाक हुआ कहा जा सकता है। उनमें लैंगिक विकृति या विकलांगता पाई जाती है जो जन्मजात होती है।[3]

Year-4 Volume: II, April-June, 2022 Issue-14 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

साहित्य समाज के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इधर किन्नरों के प्रति संवेदनशील भाव उत्पन्न करने में हिन्दी साहित्य ने अग्रणी भूमिका निभाई है। इन्हें केन्द्र में रखकर कई उपन्यास, कहानी संग्रह, कविता संग्रह, लघुकथा लिखे जा रहे हैं। किन्नर समुदाय के लोगों को अपनी 'आप बीती' लेखनीबद्ध करने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि जब वे खुद समाज से सीधे सम्पर्क साधने की कोशिश करेंगे तो इनके विषय में फैली अनेक भ्रंतियाँ भी दूर हो सकेंगी।

'Yes, I Am different but different is not wrong. Different is unique.[4]

किन्नरों का अस्तित्व आदिकाल से है। 'रामचरितमानस' में कई स्थलों पर इनका उल्लेख है, वहीं 'महाभारत' में शिखण्डी, अर्जुन के वृहन्नलला रूप एवं अरवान की कथा का वर्णन मिलता है। हिन्दू धर्म के अतिरिक्त बौद्ध एवं जैन धर्म में भी तीसरे लिंग के अस्तित्व को स्वीकारा गया है। कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' में किन्नरों का उल्लेख किया है।

सामाजिक दृष्टिकोण के अनुसार सारे हिजड़े यौन कर्मी हैं, जो गलत है। इसी कारण हमें सामाजिक सम्मान नहीं मिल पा रहा है, हमें समाज में अवांछित माना जाता है। हमारा सामाजिक बहिष्कार किया जाता है। लोगों को हमें देखने, समझने व परखने के लिए अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त होना पड़ेगा, जो अश्लीलता का चश्मा लगाकर हमारे बारे में देखते-सुनते हैं, वह उतारना होगा।'[5]

'महेन्द्र भीष्म' के उपन्यास 'किन्नर कथा' में किन्नरों की आह, वेदना और पीड़ा का उल्लेख किया गया है। किन्नरों को अपने समाज और अधिकारों के प्रति जागरुक करता आलोच्य उपन्यास राजघराने में जन्मी उस बच्ची की कहानी है, जिसका किन्नर होने का बोध होने पर उसके पिता जान से मारने का प्रयास करते हैं, ताकि उस बेटी के कारण वंश पर कोई कलंक न लगे।"[6]

उपन्यास 'आब्जेक्शन मी-लार्ड' से चर्चा में आइं कथाकार निर्मला भुराड़िया का उपन्यास 'गुलाम मण्डी' जो हमारे समाज के यथार्थ नग्न सच को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास की नायिकाएँ कल्याणी और जानकी अद्भुत चरित्र हैं इनके माध्यम से कथाकर ने किस्म-किस्म की दुनियाओं को बेपर्द करने की कारगार कोशिश की है। निर्मला जी लिखती है कि "बचपन से ही देखती आई हूँ उन लोगो के प्रति समाज के तिरस्कार को जिन्हें प्रकृति ने तयशुदा जेण्डर नही दिया। इसमें इनका क्या दोष, ये क्यों हमेशा त्यागे गए दुरदुराए गए, सताए गये और अपमान के भागी बने। इन्हें हिजड़ा, किन्नर कई नामों से पुकारा जाता है मगर तिरस्कार के साथ ही क्यों? आखिर ये बाकी इन्सानों की तरह मानवीय गरिमा के हकदार क्यों नही"[7] अपनों के द्वारा ही तिरस्कृत अंगूरी के दर्द को हम महसूस कर सकते है। जब वह कहती है- "आज तो मैं यही कहूँगी कि मैं दर-दर मारी फिरती थी क्योंकि मैं ऐसी थी ना। माँ को टी0वी0 थी। उसके जीते जी बाप ने दूसरी शादी कर ली थी। हम छः भाई-बहन थे मुझ एक को छोड़ कर सब पूरे थे। मेरे दाढ़ी-मूंछ नहीं निकले, आवाज छोरियों जैसी रह गयी तो सब मेरे को मारते-पिटते थे।। बाप भी जब देखो तब हाथ छोड़ देता था। तो मैं घर से भाग गई पर भूखी मर गयी, कोई काम नही देता था लोगों के घर बर्तन मांजने गयी तो बोले हम हिजड़े से बर्तन मंजवायेंगे क्या? मैने कह दिया उससे बर्तन थोडी मांजते हे मांजते तो हाथ से ही है न तो घराती ने थाने में रिर्पोट कर दी कि हिजड़ा घर की औरतों को छेड़ रहा है। अश्लील बातें कर रहा है पुलिस मुझे पकड़कर ले गयी मारा भी और

Year-4 Volume: II, April-June, 2022 Issue-14 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

रेप भी किया अब पूछो। अब पूछो कानून के रखवालों से, भला हिजड़ों को पुरुष थाने में क्यों भेजते हैं नही तो बनायें तीसरा थाना। नहीं क्या?" [8]

तात्पर्य यह है कि किन्नर भी सामान्य मानव की तरह हैं। इन्हें भी अपना जीवन जीने का अधिकार है। अपने रास्ते चुनने का अधिकार है। इन लोगों को भी वो सारे अधिकार मिलने चाहिए जो एक सामान्य मानव को मिलते हैं। इनको शिक्षित करने के लिए हमारे समाज को सामने आना चाहिए जिससे ये लोग भी आत्मनिर्भर बन एक अच्छी जिन्दगी जी सकें आज भी मुख्य धारा के समाज में किसी व्यक्ति के साहस या उसकी वीरता पौरूष अथवा मर्दानिगी पर सवाल उठता है तो उसे हिजड़ा कहकर दुत्कारा जाता है यानि मुख्य यौन धारा के बहुसंख्यक पुल्लिगीं और स्त्रीलिंगी लोगों के लिए हिजड़ा शब्द एक भद्दी गाली की तरह है।

लक्ष्मी नरायण त्रिपाठी अपने साक्षात्कार में इस समुदाय की आर्थिक, सामाजिक स्थिति के सन्दर्भ में कहती है। कि "हिजड़ो के पास बुद्धि नही होती? उनके पास प्रतिभा नही होती? बल नही होता? वह राजनीति में नही जा सकते? फौज में नही जा सकते? इन बातों को किन तर्कों के आधार पर तय किया? आपने कलाकारों प्रतिभावनों को मजबूर कर दिया, पचास-पचास रुपये में देह बेचने को, ताली बजाने को।"[9]

**नहीं नारी हूँ मैं और नर नहीं हूँ,**
**विवश हूँ मूक हूँ पत्थर नहीं हूँ,**
**जिसे मौका मिला उसने सताया,**
**सभी ने रक्त के आँसू रूलाया।**

भारतीय समाज में हिजड़ा समुदाय की यही सच्चाई है। स्त्री और पुरुष के बीच अपनी लैंगिक अस्मिता को खोजता यह समाज आज भी संघर्षरत है। हाशिए पर धकेला यह समाज उपेक्षित एवं लांछित जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। समाज की 'द्वि-लिंगी' मान्यता से 'इतर लैंगिकता' पर हमेशा ही अत्याचार हुआ है। वे चाहकर भी स्त्री या पुरुष खाँचें में अपने को ढाल नहीं पाते। इन रूपों में उन्हें घुटन महसूस होती है। वे तृतीय लिंग के साथ अपना अस्तित्व पाना चाहते हैं किन्तु पुरुषसत्तात्मक समाज ने प्रजनन को पुरुषार्थ के साथ जोड़कर किन्नर समुदाय को नामर्द ही घोषित किया है। किन्नर समुदाय सामाजिक समस्याओं से जूझता हुआ आज भी अपने अस्तित्व व अधिकारों के लिए संघर्षरत है।

**उपसंहार**

तात्पर्य यह है कि जब तक समाज की मानसिकता तथा व्यवहार में इस समुदाय के प्रति नजरिये में बदलाव नहीं आयेगा तब तक इनका विकास होना असम्भव है। समाज में अपनी नई पहचान के बावजूद भी ये वर्ग कहीं-न-कहीं अपने अधिकार, सम्मान तथा अस्तित्व की लड़ाई आज भी लड़ रहा है। आवश्यकता है कि इनकी संवेदना को समझा जाय और समाज तथा राष्ट्र हित में इन्हें नियोजित किया जाए।

Year-4 Volume: II, April-June, 2022 Issue-14 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

**सन्दर्भ-**

1. मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से उद्धृत
2. किन्नर गाथा, भूमिका, पृ0 1
3. माधव नीरजा, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ तथ्य, कुछ सत्य), ए.बी.एस. पब्लिकेशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण: 2019, पृ0 15
4. वाङ्मय पत्रिका के फेसबुक लाइव मंच पर धनन्जय सिंह का व्याख्यान
5. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ0 91
6. वही, पृ0 पृ. 8
7. गुलाम मण्डी, निर्मला भुराड़िया, सामयिक प्रकाशन, संस्करण 2016, पृ0 6
8. वही, पृ0 71
9. हंस, मासिक पत्रिका, अंक सितम्बर 2016, नई दिल्ली, पृ0
10. इतर लैंगिकता की राजनीति, भूमिका, पृ0 9

The Asian Thinker